International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1081-1083

राजेश जोशी जी के काव्य में नारी के प्रति संवेदनशीलता

मीनल दुबे
शोध केंद्र, म. ल. बा. क. महाविद्यालय, भोपाल बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में नारी शाक्ति का बहुत महत्व है। अर्द्ध नारीश्वर के स्वरूप में इसी भारतीय चिंतन की अवधारणा मिलती है। नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे के बिना अधूरे भी हैं। मध्यकाल में जब भारत पर आतातायी हमले हुए और नारियों को जबरदस्ती उठा कर उनकी इच्छा के विरूद्ध तत्कालीन सत्ताधारियों ने उनका धर्मपरिवर्तन किया तथा नारी को कुदृष्टि से देखा जाने लगा तब से समाज में नारी की स्थिति का अत्यधिक पतन प्रारंभ हो गया फलतः भारतीय नारी दयनीय स्थिति में पहुँच गई। स्वतंत्रता के बाद नारी का उत्थान तेजी से हुआ और वर्तमान समय में नारी का स्थान अंतरिक्ष तक पहुँच चुका है।

वर्तमान हिन्दी साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरकर सामने आया है। नयी पीढ़ी की कविता में कवयित्रियों की विशिष्ट रचना–दृष्टि के कारण उनकी अलग पहचान बनी है। हालांकि ''आज तक स्त्री अपने ऊपर हुए अत्याचारों को सहती थी और मौन रहती थी। उसका संघर्ष था तो यही कि अपनी इन बेहद निजी बातों को सबके सामने उजागर करे तो कैसे और उसके मौन ने ही पुरूष को खुली छूट दे रखी थी कि वह स्त्री को चाहे जैसे प्रताड़ित करे। अच्छा है कि तुम्हारा यह स्तंभ कम से कम स्त्रियों को मुंह खोलने के लिए प्रेरित तो कर रहा है। उनके दिमाग में इतना और बिठाओ कि यह अपने को उजागर करना नहीं वरन् पुरूषों की सामंती और दंभी मनोवृत्ति को उघाड़ना है। विशेष रूप से उन पुरूषों की जो सभ्यता, आधुनिकता और महानता के लबादे ओढ़कर, क्रान्तिकारी मुखौटा लगाकर स्त्री विमर्श के नाम पर समाज में, अपनी रचनाओं में तो स्त्री की बराबरी के, उसकी समानता के झंडे बुलंद करता रहता है पर निजी जीवन में....? मुझे पूरा विश्वास है कि जब स्त्रियाँ अपने निजी को सार्वजनिक करने लगेंगी, बिना किसी खौफ और डर के सब कुछ उजागर करने लगेंगी तो इन पुरूषों के व्यवहार पर जाने–अनजाने अंकुश तो लगेगा। लेकिन यह प्रक्रिया बेहद धीमी है, इसको एक गति देने की जरूरत है।''[1] (मन्नू जी ने यह कथन 'कथादेश' सितम्बर 07 में लिखा था)

डॉ0 अम्बेडकर ने कहा है– ''शोषित को यह पहचान दिला दो कि उसका शोषण हो रहा है, विद्रोह करना वह अपने आप सीख जायेगा।''[2] कविता या साहित्य में भी यही पहचान करवाई जाती है। साहित्यकार को रास्ता बताने की जरूरत नहीं होती बस यह बताना है कि स्थितियाँ यह हैं आपको उसमें क्या चयन करना है, उन्हें झेलना है या बाहर निकलना है। जरूरतमंद अपना रास्ता स्वयं तलाश लेता है।

श्राजेश जोशी की कविता में नारी के प्रति चिंतन

यद्यपि पुरूष साहित्यकारों ने एक दीर्घ अवधि से स्त्री की चिंताओं का रेखांकन किया है, कर रहे हैं। राजेश जोशी जी का नारी–चिंतन इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि वह स्त्री को दयनीय नहीं बनाते हैं और उसे महत्वाकांक्षी रूप भी नहीं देते हैं। उन्होंने अपनी कविता में स्त्रियों की केवल लाचार स्थिति को प्रस्तुत नहीं किया बल्कि उसके महत्व को बताने वाली कविता रचा है। वे स्थितियों को सूक्ष्मता से परखकर ज्यों का त्यों पाठक के समक्ष रखते हैं–

> ''वे अपना घर दुआर, चूल्हा चौका और न जाने कितने कामकाज छोड़कर आई हैं आज कुछ स्त्रियों की गोद में उनके दूध पीते बच्चे हैं जो बीच–बीच में कुनमुनाने लगते हैं कुछ के साथ थोड़े बड़े बच्चे उनकी साड़ी का छोर पकड़कर चल रहे हैं पैदल चलते बच्चे बीच–बीच में जब थक जाते हैं तो गोद में उठाने के लिए मचलने लगते हैं पसीने से भीगे उनके ताम्बई चेहरों को रौंदती थकान के पीछे छिपी उनकी चिन्ताएँ, दुख और आशंकाएँ बीच–बीच में कौंध जाती हैं''[3]
>
> (रैली में स्त्रियाँ, चाँद की वर्तनी पृ0सं0 32)

रैली में शामिल हुई इन स्त्रियों के लिए अपना घर–दुआर, चूल्हा–चौका छोड़ना सहज नहीं है। अपने अधिकारों को पाने की प्रयास में ये वे स्त्रियाँ हैं जो अपना पारिवारिक सन्तुलन बनाए रखने के लिए दोहरा जीवन जीने को विवश हैं। ये वे कामकाजी महिलाएँ हैं जो एक दिन भी काम बन्द कर दें तो पारिवारिक धुरी के साथ सामाजिक व्यवस्था भी चरमरा जाए क्योंकि इनकी छोटी–छोटी चिंताओं आशंकाओं में भी जो कोमल भाव निहित हैं वह इनकी कर्त्तव्यशीलता का द्योतक है। राजेश जी इन आशंकित परन्तु अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत महिलाओं की आन्तरिक हलचलों को शब्दों के बीच कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं कि–

> ''कहीं कभी तो कुछ बेहतर होगा उनके भी जीवन में यही सोचकर घर दुआर छोड़कर इस शहर तक आई हैं ये स्त्रियाँ थक चुकी हैं बुरी तरह पर थके नहीं हैं उनके हौसले थकान को परास्त करती उनकी आवाज़ शहर के शोर को बार–बार चीर देती है बीच से''[4]
>
> (रैली में स्त्रियाँ, चाँद की वर्तनी, पृ0सं0 32)

स्त्री–विमर्श को लेकर आज जो भी नारे –वादे बुलंद हैं। वह चौके की हद से बाहर नहीं हो सके ना ही हो सकते हैं। उन्होंने नारी के विवेक और करूणा का सघन चित्रण अपनी सहज अभिव्यक्तियों के माध्यम से किया है।

> ''कोई डब्बा खोलते हुए कहती है : यह तो मैं हूँ कि अबेर रखा है सबकुछ वरना तुम तो ढूँढ नहीं पाते अपने आप

को जाओ बाहर जाकर टी वी देखो एक काम पूरा नहीं करोगे और फैला दोगे मेरी पूरी रसोई !''[5]

(उसकी गृहस्थी, दो पंक्तियों के बीच पृ0सं040)

कवि ने इस कविता में नारी मनोविज्ञान की बारीक रेखाओं को बखूबी खींचा है। आज स्त्रियाँ घर–गृहस्थी के साथ–साथ बाहर कार्य–क्षेत्र में भी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रही हैं परन्तु 'वह' कुछ आज भी उनके आस–पास इस तरह लिपटा है जो उन्हें 'मुक्त साँस' लेने से रोक लेता है। यह 'वह' क्या है? संभवतः पितृसत्तात्मक समाज का दंभ हो या चिरकाल से पड़ी बेड़ियों के टूट जाने पर भी उसके 'होने' का एक रिक्त अहसास या भय कुछ तो है जो स्त्री को एक स्वतन्त्र मनुष्य की तरह नहीं जीने दे रहा है। जबकि स्त्री ने अपना जीवन अपने लिए कहाँ जिया अब तक? राजेश जी कहते हैं–

''अब वो तुम्हारे बोले गये वाक्य के सिर्फ अन्तिम शब्द दोहराती है तुम उसे देख नहीं पाते या देखकर अनदेखा कर जाते हो लेकिन वो वीरान घाटियों से, उदास स्मृतियों से भरे गुम्बदों से कन्दराओं से और सूख चुके कुँओं से लगातार दोहराती रहती है तुम्हारे वाक्य के अन्तिम शब्द।''[6]

('प्रतिध्वनि', 'दो पंक्तियों के बीच' पृ0सं0 49)

अपार उदारता के बाद भी स्त्री को चौके की चारदीवारी से मुक्त करने की मंशा इस वर्ग ने कभी प्रकट नहीं की क्योंकि यह वर्ग जानता है प्रत्येक वस्तु को उसके यथास्थान रखने की कुशलता जिन हाथों में है क्या उनका कार्य कोई अन्य निभा सकता है? यह बात राजेश जी ने अपनी कविता 'उस प्लम्बर का नाम क्या है' में व्यक्त की है–

''ऐसे वक्त में हमेशा स्त्रियाँ ही मदद कर सकती हैं यह थोड़ा अजीब जरूर लगेगा लेकिन यही सच है कि स्त्रियाँ ही उन लोगों के बारे में सबसे ज्यादा जानती हैं जो आड़े वक्त में काम आते हैं जो जीवन की छोटी छोटी गड़बड़ियों को दुरूस्त करने का हुनर जानते हैं पत्नी जानती थी कि चार दिन पहले जमादारिन के यहाँ बच्चा हुआ है वो उसके बच्चे के लिए हमारी बेटी के छुटपन के कपड़े निकाल रही थी उस वक्त''[7]

('उस प्लम्बर का नाम क्या है' दो पंक्तियों के बीच पृ0सं0 46–47)

राजेश जी के साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' को लेकर बहुत अधिक कविताएँ नहीं दिखती परन्तु स्त्री को लेकर जो उनका दृष्टिकोण है वह अन्य कवियों से कुछ इस प्रकार भिन्न है जैसे बिना शक्कर के दूध की मिठास। वह स्त्री विमर्श नहीं करते परन्तु स्त्री के बिना विमर्श भी नहीं करते तात्पर्य यह कि उनकी काव्य–संवेदना में स्त्री का कद कहीं भी छोटा नहीं है। स्त्री उनके समानान्तर खड़ी होकर अपनी बात कविता में कहती है–

कितनी भी सतर्कता बरतूँ पर एक न एक गलती वह ढूँढ़ ही लेती है। ओह ! आज फिर तुमने वाश बेसिन पर दाढ़ी काटी न अब ये बाल नाली में फँस जाएँगे फिर बन्द हो जाएगी नाली पिछले हफ्ते ही कितनी मुश्किल से इसे साफ किया था यह पेड़ भी न, नाक में दम कर डाला है इसने आज फिर सारे आँगन में पत्तों को विखरा दिया है। जितनी देर घर में रहती है बस कुछ न कुछ बोलती ही रहती है हमेशा कि वह हो न हो घर के हर कोने में बचा रहता है उसका बोलना ![8]

(मेरे भीतर एक स्त्री रहती है, चाँद की वर्तनी पृ0सं052)

राजेश जी ने 'चाँद की वर्तनी' और 'दो पंक्तियों के बीच' काव्य–संग्रहों में कुछ महत्वपूर्ण कविताएँ 'आधी दुनिया' के लेखन को समर्पित की हैं। इनमें इनकी एक कविता 'जरिता के बच्चों की कहानी' बेहद ही मार्मिक तथा समस्त विमर्शों का मूल राग है। इसमें पितृसत्तात्मक समाज की हिंसक प्रवृत्तियों को परत दर परत उधेड़ती यह कविता स्त्रियों के उस तत्व का समग्र मूल्यांकन करती है जिसका 'झीना आवरण' मातृसत्ता की शक्ति को छिपाकर भी अपने को समष्टि के हितार्थ प्रस्तुत करता है। यह शास्वतवृत्ति मात्र स्त्री में ही तो है कि जब खांडव बन धू–धू कर जलता है तो बिना अपने प्राणों की रक्षा किए 'जरिता' बच्चों की चिंता करती है। उस समय पिता ने अपने कर्त्तव्य की इतिश्री क्यों समझ ली? क्या समस्त दायित्व उसका है? जिसने 'जनन' किया? यह कविता समाज की पुरूष सत्तात्मक मानसिकता का उत्कृष्ट उदाहरण है–

''चारों ओर आग ही आग थी और धू–धू करता जल रहा था खांडव वन पिता मनुष्यों की अपनी दुनिया में लौट चुके थे वे ऋषि थे हमें पैदा करने को ही आए थे पक्षियों की योनि में जाते जाते उन्होने अग्नि से मनुहार की थी कि वह रक्षा करे हमारी। जरिता जो हमारी माँ थी उड़–उड़कर ढूँढ रही थी कोई ऐसी जगह कि जहाँ आग की पहुँच से बचा सके हमें वह ऋषि नहीं थी कि प्रार्थना करती और छोड़कर कहीं चली जाती हमें असहाय–सी वह भी झुलस रही थी उसी आग में जो जला डालने पर आमादा थी आज सब कुछ को।''[9]

('जरिता के बच्चों की कहानी', चाँद की वर्तनी, पृ0सं0 65)

राजेश जी की 'स्त्री चर्चा' बीच का रास्ता तय करती है, जहाँ वह पुरूष की कमजोरी भी व्यक्त करते हैं कि पुरूष का काम स्त्री के बिना चल नहीं सकता अस्तु उसे मुक्ति चाहिए परन्तु पुरूष से मुक्त होकर नहीं।

उपसंहार

स्त्री–विमर्श आज की कविता के केन्द्रीय स्वर हैं। वर्तमानकाल के लगभग सभी कवि–लेखकों की रचनाओं में समाज द्वारा इनके निरन्तर हो रहे शोषण एवं उत्पीड़न पर गहरी चिंता व्यक्त हुई है। नारी–चेतना के सन्दर्भ में वर्तमान कविता 'नारी मुक्त आन्दोलन' का पथ वरण करके सृजित अवश्य हुई है और निरन्तर हो रही है किन्तु प्रश्न यह उठता है कि पुरूष सत्तात्मक देश में शताब्दियों पूर्व से चले आ रहे पुरूष–वर्ग के शोषणतंत्र से क्या आज की नारी अभी तक मुक्त हो सकी है? वर्तमान काव्य में राजेश जोशी जी का नारी–विषयक चिंतन भी समाज में नारी की दोयम स्थिति पर अत्याधिक चिंतित होकर व्यक्त हुआ है। नारी–विषयक चिंतन व्यक्त करते समय राजेश जी की कविता नारी के शोषित रूप को व्यक्त करने के साथ ही पुरूष समाज में नारी की महानता एवं उसके महत्व का प्रतिपादन विषम परिस्थितियों में भी सौन्दर्य–बोध के साथ करना नहीं भूलती। राजेश जी के काव्य में वर्णित स्त्रियाँ अपने स्वत्व एवं अधिकार के प्रति सतत् जागरूक, संघर्षशील तथा आधुनिक विचारों से पोषित, रैली में चलने वाली क्रोधित स्त्रियाँ हैं।

सन्दर्भ

1. शब्दयोग (त्रै0मा0पत्रि0) सं0 सुभाषपंत, अतिथि सं0 उर्मिला शिरीष, मार्च–2009 योगदान, 922–23, फैज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली, पृ0सं0 11–12
2. शब्दयोग (त्रै0मा0पत्रि0) सं0 सुभाषपंत, अतिथि सं0 उर्मिला शिरीष, मार्च–2009 योगदान, 922–23, फैज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली, पृ0सं0 11
3. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी वर्ष–2006 राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 32
4. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी वर्ष–2006 राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 32
5. दो पंक्तियों के बीच–राजेश जोशी, पहला सं0 2002, पहली आवृत्ति 2004, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 40
6. दो पंक्तियों के बीच–राजेश जोशी, पहला सं0 2002, पहली आवृत्ति 2004, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 49
7. दो पंक्तियों के बीच–राजेश जोशी, पहला सं0 2002, पहली आवृत्ति 2004, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग नई दिल्ली पृ0सं0 46–47
8. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी, वर्ष–2006, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 52
9. चाँद की वर्तनी–राजेश जोशी, वर्ष–2006, राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1–बी, नेताजी सुभाषमार्ग, नई दिल्ली पृ0सं0 65